No. of Printed Pages : 3

BHDC–132

स्नातक उपाधि कार्यक्रम (सी. बी. सी. एस.)

(बी. ए. जी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2024

बी.एच.डी.सी.-132 : मध्यकालीन हिन्दी कविता

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्हीं* **चार** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किसी **एक** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 20

(क) काहे मन मारन बन जाई, मन की मार कवन सिधि पाई।

बन जाकरि इहि मनवा न मरहीं, मन को मारि कहहु कस तरहीं।

मन मारन का गुन मन काहीं, मनु मूरख तिस जानत नाहीं।

पंच विकर जौ इहि मन त्यागौं, तौं मन राम चरन महिं लागौ।

रिदै राम सुध करम कमावऊ, तौ 'रविदास' मधु सूदन पावऊ।

(ख) तन की दुति स्याम सरोरुह लोचन कंज की मंजुलताई हरैं।

अति सुंदर सोहत धूरि भरे, छबि भूरि अनंग की दूरि करैं।

दमकैं दतियाँ दुति-दामिनि ज्यों, किलकैं कल बाल-विनोद करैं।

अवधेस के बालक चारि सदा, तुलसी मन मंदिर में बिहरैं।।

(ग) रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

पानी गये न ऊबरे, मोती मानस चून।।

2. भक्तिकाव्य के विकास का परिचय दीजिए। 20

3. रीतिकालीन परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए। 20

4. मीराबाई की भक्ति की विवेचना कीजिए। 20

5. सूरदास की काव्य-भाषा का विश्लेषण कीजिए। 20

6. तुलसी-पूर्व रामकाव्य परंपरा का परिचय दीजिए। 20

7. जायसी के काव्य में निहित प्रेमतत्व का विवचन कीजिए। 20

8. बिहारी की कविता में शृंगार और प्रेम चित्रण पर प्रकाश डालिए। 20

9. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2×10=20

(क) मीराबाई की रचनाएँ

(ख) रामभक्ति शाखा

(ग) रीतिकालीन वीर काव्य और भूषण

(घ) घनानंद का जीवन परिचय